पू. मुनुवां भैया को प्रणाम XII/174

आपका पत्र मिला था। पर उत्तर देने की सोच सी ही रह गई। आपका द्वार तो हमेशा ही मेरे लिये खुला रहा और खुला है, यह मुझे भली भांति विदित है। पर घर को छोड़ कर पैर निकालने में बड़ी अड़चनें हैं। यद्यपि घर में है क्या जो कोई लेगा। पर फिर भी ये वही घर है जिसको उन्होंने बड़े शौक से बनवाया और मुझे सौंपा। जीते जी वो घर ताकते ही रह गए। अस्पताल जाते वक्त भी मृत्यु से दो घंटे पूर्व कहते गए मजूर ने छुटाना पुताई पूरी करादो, और दरवाजे बड़े गन्दे हैं सब में रंग कराऊंगा। यद्यपि वो नहीं है पर उनकी आत्मा स्वर्ग से भी मेरी रक्षा करती है। मुनुवा भैया अपने बाप की हम सात बहिने हैं, जिनमें बीबी बहुवा की और मैं भैया की दुलारी बुगली भाभी की थी। बहुत बचपन की तो सिर्फ कमला बीबी बताती हैं की भाई कंगरे पर पैदा हुई थी इसलिये तुम्हारा बड़ा अनादर था पर बाद की बात जानती हूं कि हमेशा हर बात में हर आदमी यही तुलना करता था कि बुगली अच्छी तुम बुरी पर ईश्वर की देन ब्याह भी वैसे ही घरों में होगया। पर जब से ब्याह कर यहां आई सास ने और पति ने हमेशा सर आंखों पर लिया और हर तरह तारीफ ही की बड़ी सीधी बड़ी मेहनतिन बड़ी भाग्यवान इत्यादि बताया; मैं भी सुनके फूली नहीं समाती थी कभी कोई काम में वो आगे नहीं बढ़े, हमेशा मुझसे ही कहा ये काम करना है जब मैं कह देती थी अच्छा, तो संतोष की सांस ले लेते थे। बड़े बड़े आदमी के पास उठने बैठने या बड़े से बड़े काम में मुझे आगे रखते थे। साल भर की बीमारी से और भी मेरे आधीन होगए थे, सबसे तारीफ करते थे, अतः मैं भी उनसे बड़े गर्व से कहती थी मैंने ही तुम्हें नीम के नीचे से लाकर इस पक्के मकान में बैठाया, तब हंसते थे। पर ईश्वर ने मेरे गर्व को चूर कर दिया। जिसने मुझे इतना आदर दिया और दिलाया, लखनऊ के जज मैजिस्ट्रेट तक पैर छूते सब चाची कहते थे, इसने ही मुझे धोखा देकर फिर गढ़े में गिरा दिया। किसी का कोई काम होता बिरादरी वालों का या बाहर वालों को सीधे मेरे घर चले आते। चाचा

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India
NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

साइत पूछने चाची से रीत रिवाज। जो काम हो
चाची चाचा को सौंप कर लोग निश्चिन्त
हो जाते थे। मुझसे कहते थे तुम म्युनिसिपै-
लिटी हो मैं गवरमेंट, मैं तो सिर्फ मंजूर
कर देता हूं करती तो सब तुम्ही हो। तिसपर
भी अब तो आपके वालो में भी भाभी से लेकर
सभी मेरी तारीफ करते थे। मुझे वो दिन याद है
जब मैंने अपनी सीताराम्री बनवा के भैया को दिखाया
था भैया ने आंगन में खड़े होकर कहा था सब लोग
देखलो मैंने तीन लड़कियां ब्याही हैं जिसमें इसे ही
लोग गरीब कहते थे पर इसे ही ब्याह कर मैं
निश्चिन्त हुवा हूं की ये सुख से खाती पह-
नती है। बाकी दोनो की मुझे चिन्ता है। और
भी उनकी बाते हमेशा मुझे याद आती हैं मुझे
मेरे भाइयों ने हमेशा ही माना और मानते रहेंगे
पर जिसने ऊपर उठाया था. मांग में सिन्दूर
देके उसी ने सिन्दूर पोंछ कर अमंगल सूचक भी
बना दिया अब कहां जाऊं। पर आपके यहां
के लिये नही आपको तो मैं छोटी बहिन हूं आर
किसी भांति कुछ इतजाम कर सकी तो जरूर आऊंगी
अब जगह नही है फिर कभी शारदा

पहले यहां पर खोलिये To open cut here

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

POSTAGE 10 nP INDIA १० नपै

पं. पद्माकान्त जी मालवीय
1. कीरअप्पा रोड
द्रौपदी घाट
इलाहाबाद

पहला मोड़ First fold

दूसरा मोड़ Second fold

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

6 MA... ALLAHABAD

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India